❁ 16 सितम्बर 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❁

✺ ज्ञान-

1] तुम्हारा बर्थ राइट है मुक्ति और जीवनमुक्ति। तुम्हें अब फीलिंग आती है कि हमें बाप के साथ वापिस घर जाना है। तुम जानते हो– बाप आये हैं भक्ति का फल मुक्ति और जीवन मुक्ति देने। अभी सबको शान्तिधाम जाना है। सबको अपने घर का दीदार करना है।

2] अभी तुम बच्चे जानते हो– बाप बरोबर लिबरेट भी करते हैं फिर शान्तिधाम में सबको जरूर जाना है। अपने घर का दीदार सबको करना है। घर से आये हैं तो पहले उनका दीदार करेंगे, उसको कहते हैं गति-सद्गति।

3] तुम बच्चों को तो फीलिंग रहती है, हम अपने घर भी जायेंगे और फल भी मिलेगा। नम्बरवार तुमको मिलता है तो और धर्म वालों को भी फिर समय अनुसार मिलता है।

4] सब आत्मायें जब यहाँ आ जाती हैं तो वहाँ फिर एक भी नहीं रहती हैं। वहाँ जब एकदम खाली हो जाता है तब फिर सब वापस जाते हैं। तुम यह संस्कार ले जाते होत नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार। कोई नॉलेज के संस्कार ले जाते हैं, कोई प्योरिटी के संस्कार ले जाते हैं। आना तो फिर भी यहाँ ही है। परन्तु पहले तो घर में जाना है। वहाँ हैं अच्छे संस्कार। यहाँ हैं बुरे संस्कार। अच्छे संस्कार बदल कर बुरे संस्कार हो जाते हैं। फिर बुरे संस्कार योगबल से अच्छे होते हैं। अच्छे संस्कार वहाँ ले जायेंगे। बाप में भी पढ़ाने के संस्कार हैं ना। जो आकर समझाते हैं। रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझाते हैं। बीज की भी समझानी देते हैं, तो सारे झाड़ की भी समझानी देते हैं।

5] बीज की समजानी है ज्ञान और झाड़ की समझानी हो जाती है भक्ति। भक्ति में बहुत डिटेल होती है ना। बीज को याद करना तो सहज है। वहाँ ही चले जाना है। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने में थोड़ा ही समय लगता है। फिर सतोप्रधान से तमोप्रधान बनने में 5 हजार वर्ष लगते हैं एक्यूरेट। यह चक्र बड़ा एक्यूरेट बना हुआ है जो रिपीट होता रहता है।

6] स्वर्ग में जन्म कम, आयु बड़ी होती है। नर्क में जन्म जास्ती, आयु छोटी होती है। वहाँ हैं योगी, यहाँ हैं भोगी इसलिए यहाँ बहुत जन्म होते हैं।

7] जिनकी दिल विशाल है उनके स्वप्न में भी हद के संस्कार इमर्ज नहीं हो सकते।

✺ योग-

1] – – –

✺ धारणा-

1] मीठे बच्चे– योगबल से बुरे संस्कारों को परिवर्तन कर स्वयं में अच्छे संस्कार डालो। ज्ञान और पवित्रता के संस्कार अच्छे संस्कार हैं।

2] बच्चा बाप का बना और बेहद का सुख मिला। इसमें मन्सा, वाचा, कर्मणा पवित्रता की जरूरत है। लक्ष्मी-नारायण को बाप का वर्सा मिला है ना। यह पहले नम्बर में हैं, जिनकी ही पूजा होती है। अपने को भी देखो– हमारे में ऐसे गुण हैं। अभी तो बेगुण हैं ना। अपने अवगुणों का भी किसको पता नहीं है।

3] कई बच्चे चलते-चलते श्रीमत के साथ आत्माओं की परमत मिक्स कर देते हैं। जब कोई ब्राह्मण संसार का समाचार सुनाता है तो उसे बहुत इन्ट्रेस्ट से सुनते हैं। कर कुछ नहीं सकते और सुन लेते हैं तो वह समाचार बुद्धि में चला जाता, फिर टाइम वेस्ट होता। इसलिए बाप की आज्ञा है सुनते हुए भी नहीं सुनो। अगर कोई सुना भी दे तो आप फुलस्टाप लगाओ, जिस व्यक्ति का सुना उसके प्रति दृष्टि वा संकल्प में भी घृणा भाव नहीं हो तब कहेंगे परमत से मुक्त।

✺ सेवा-

1] बाप ने समझाया था यह पर्चा है बहुत अच्छा– तुम स्वर्गवासी हो या नर्कवासी हो? तुम बच्चे ही जानते हो यह मुक्ति जीवनमुक्ति दोनों गॉड फादरली बर्थ राइट हैं। तुम लिख भी सकते हो। बाप से तुम बच्चों को यह बर्थ राइट मिलता है। बाप का बनने ने दोनों चीजें प्राप्त होती हैं। वह है रावण का बर्थ राइट, यह है परमपिता परमात्मा का बर्थ राइट। यह है भगवान का बर्थ राइट, वह है शैतान का बर्थ राइट। ऐसे लिखना चाहिए जो कुछ समझ सकें। अब तुम बच्चों को हेविन स्थापन करना है। कितना काम करना है !